चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक जागरण .....
दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. ....14..... कॉलम ....3-6.....

जागरण के अभियान से जुड़ा हकृवि, कुलपति बोले-पानी की बचत के लिए सराहनीय प्रयास

दैनिक जागरण के आधा गिलास पानी अभियान के दौरान हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह को आधा गिलास पानी देता कर्मचारी। • जागरण

यह है आधा गिलास पानी अभियान

आधा गिलास पानी अभियान के तहत होटल, रेस्टोरेंट और विभिन्न संस्थानों, कार्यालयों से दैनिक जागरण अपील करता है कि उनके यहां आने वाले लोग, कर्मचारी या विद्यार्थी आधा गिलास पानी इस्तेमाल करें। इसका अभिप्राय यह है कि जितनी प्यास या जरूरत हो उतना ही पानी इस्तेमाल किया जाए। ऐसा न हो कि एक गिलास में से आधा गिलास पानी पीकर लोग आधा गिलास छोड़ दें और वो बेकार हो जाए।

जागरण संवाददाता हिसार : दैनिक जागरण की तरफ से चलाए जा रहे आधा गिलास पानी अभियान में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) भी जुड़ गया है। हकृवि के कुलपति ने अपने कार्यालय में इस अभियान से जुड़ते हुए आधा गिलास ही लाने के आदेश दिए है। कुलपति ने इस अभियान को सार्थक बताते हुए पानी की बचत करने की मुहिम में एक अहम योगदान बताया।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि हिसार में पानी की बचत की बात करना सराहनीय कदम है। जिस तेजी से पानी को व्यर्थ किया जाता है उसी हिसाब से उसे बचाने की जरूरत है। दैनिक जागरण ने आधा गिलास पानी अभियान शुरू कर एक बड़ी शुरूआत की है। इस मुहिम में शिक्षण संस्थान के अलावा होटल आदि सभी वर्ग जुड़ रहे है। अधिकारियों भी इस अभियान से जुड़े है। उन्होंने कहा कि यह अभियान पानी को बचाने के साथ लोगों को छा रहे संकट की तरफ ध्यान आकर्षित करता है।

पीने का पानी हो या सिंचाई का पानी हर व्यक्ति को इसका प्रयोग सही ढंग से करना चाहिए। यह उनके लिए प्रसन्नता का उद्देश्य है कि वह इससे जुड़े है। उनका विश्वविद्यालय इस अभियान से जुड़ कर पूरा साथ देगा। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की तरफ से जल शक्ति अभियान चलाया हुआ है, वह भी एक बड़ा अभियान है। दैनिक जागरण ने उसके साथ ही पानी बचाने का अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. 13 कॉलम 1-6

उपलब्धि

आइसीएआर रैंकिंग में लुवास ने पाया 55वां स्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की तरफ से जारी की गई सूची

कृषि विश्वविद्यालयों में हकृवि देश में दूसरे पायदान पर

जागरण संवाददाता, हिसार : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) कृषि मंत्रालय की तरफ से आइसीएआर रैंकिंग वर्ष 2018 जारी कर दी है। इस लिस्ट में करनाल के नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने पहला स्थान पाया है। कृषि विश्वविद्यालय की सूची में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय देश में दूसरे स्थान पर रहा है। हकृवि से उपर पहला स्थान पंतनगर की जीबी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी का रहा। भारत सरकार की तरफ से यह रैंकिंग विश्वविद्यालय व इंस्टीट्यूट में सुविधाओं और उनकी तरफ से क्षेत्र के लिए क्या काम किए उसको देखते हुए दी गई।

हकृवि को राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड भी मिल चुका है। उसके बाद अब आइसीएआर ने अपनी रैंकिंग जारी कर दी है। आइसीएआर की रैंकिंग में हकृवि को चौथा स्थान मिला है। मगर पहले स्थान करनाल और दूसरे स्थान पर न्यू दिल्ली का इंस्टीट्यूट है। तीसरे नंबर पर कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर है और चौथे पर हकृवि। इसी प्रकार हिसार के लाला लाजपत राय यूनिवर्सिटी ऑफ वेटनरी एंड एनिमल साइंस को आइसीएआर की रैंकिंग में 55वां स्थान मिला है। रैंकिंग की दौड़ में देश के केंद्रीय कृषि विवि, राज्य कृषि विवि व आइसीएआर के संस्थानों ने भाग लिया था।

लगातार हकृवि बेस्ट

हकृवि को 2018 की रैंकिंग से पहले राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय को अनुसंधान, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1996 में बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड दिया था। इसके बाद 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थान अवार्ड और हाल ही में इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 और कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड 2018 से नवाजा गया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी छात्रों के बीच नवाचार की संस्कृति को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा देने के लिए इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सैल की स्थापना के लिए इस विश्वविद्यालय को प्रमाण पत्र प्रदान किया है।

ये हुए काम

विश्वविद्यालय की हालिया पहल जैसे कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए इनोवेशन सेंटर की स्थापना, सेंटर फार बायो नैना टेक्नोलॉजी, कॉलेज आफ एग्रीपेन्योर व बिजनेस मैनेजमेंट, दीनदयाल उपाध्याय सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फार आर्गेनिक फार्मिंग, एग्री टूरिज्म पार्क, यूनिवर्सिटी इनोवेशन सेंटर, एग्री बिजनेस इनक्यूबेशन सेंटर, आधुनिक स्वदेशी बीज बैंक और आरकेवीवाई इन्क्यूबेटर को भी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा जा रहा है। विश्वविद्यालय ने शिक्षा तथा अनुसंधान में यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड और आस्ट्रेलिया के साथ काम करने के लिए साढ़े चार करोड़ रुपये से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की। जापान की इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जापान व टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर, अमेरिका की वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी व यूनिवर्सिटी ऑफ इलीनॉयस, जेम्स हटन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कॉटलैंड तथा वगेनिंगन यूनिवर्सिटी एंड रिसर्च, नीदरलैंड के साथ सहयोग के लिए अनुबंध किए हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों, फैकल्टी एक्सचेंज, संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं और पारस्परिक हित के अन्य व्यवसायिक गतिविधियों के संदर्भ में यूरोप, अमेरिका और एशिया के दो दर्जन से अधिक प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध हैं। यहां विकसित की गई तकनीकों के व्यावसायिकरण के लिए करीब 520 सरकारी और गैर सरकारी कंपनियों व संस्थानों के साथ समझौते किए गए हैं।

भारत के अलावा 14 देशों के पढ़ रहे विद्यार्थी

विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न हिस्सों के अलावा 14 देशों के छात्र शिक्षा ले रहे हैं। इन देशों में अफगानिस्तान, श्रीलंका, म्यांमार, बोतसवाना, लाइबेरिया, तंजानिया, मॉरीशस, नेपाल, वियतनाम, तजाकिस्तान, सोमालिया, नाइजीरिया, भूटान, सूडान आदि शामिल हैं। इसके अलावा विवि में विद्यार्थियों की जेआरएफ, एसआरएफ, नैट, एआरएस जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रदर्शन को और बेहतर करने के लिए सेंटर ऑफ एक्सेलेंस फॉर ट्रेनिंग ऑफ स्टूडेंट्स की स्थापना की गई है।

282 किस्म की फसलों की पहचान की

विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों, फलों और सब्जियों की लगभग 282 किस्मों व संकरों की पहचान व विमोचन किया है। इनमें से कुछ किस्में अन्य राज्यों और यहां तक कि विदेशों में भी लोकप्रिय हुई हैं। इन किस्मों के परिणामस्वरूप चावल, कपास, गेहूं, दलहन, तिलहन व बाजरा उत्पादन में कई गुणा वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों के कारण वर्तमान में राष्ट्रीय खाद्य भंडार में योगदान करने वाले राज्यों में हरियाणा का दूसरा स्थान है।

यह रैंकिंग हरियाणा राज्य तथा इस विश्वविद्यालय की फैकल्टी, गैर शिक्षक कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों की मेहनत व प्रतिभा से प्राप्त हुई है। यह विश्वविद्यालय किसानों को समर्पित है इसलिए भविष्य में भी यह नवीन कृषि प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा किसानों के कल्याण के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहेगा। हम वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुणा करने के लक्ष्य को लेकर और कृषि की वर्तमान समस्याओं के निवारण के लिए प्रयत्नशील हैं। -प्रो. केपी सिंह, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक भूमि .....
दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. ..... 14 ..... कॉलम ..... 4-8 .....

राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान पर रहा कृषि विश्वविद्यालय

हकृवि ने आईसीएआर रैंकिंग में रचा इतिहास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड प्राप्त कर चुके हकृवि ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद आईसीएआर, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आईसीएआर रैंकिंग वर्ष 2018 के लिए कृषि विश्वविद्यालयों में द्वितीय स्थान प्राप्त करके पुनः इतिहास रचा।

उल्लेखनीय है कि इस रैंकिंग में देश के केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय तथा आईसीएआर के संस्थानों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा की अपनी अनिवार्य गतिविधियों में उच्च मानकों को दिन-प्रतिदिन बढ़ा रहा है। हाल ही में पाठ्यक्रमों में संशोधन और शिक्षक व गैरशिक्षक कर्मचारियों के कई रिक्त पदों को भरकर मानव संसाधन को मजबूत करने के अलावा विश्वविद्यालय में कई नवीन सुविधाएं स्थापित की गई हैं। इस विश्वविद्यालय के छात्रों, फैकल्टी एक्सचेंज, संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं और पारस्परिक हित के अन्य व्यवसायिक गतिविधियों के संदर्भ में यूरोप, अमेरिका और एशिया के दो दर्जन से अधिक प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध हैं। यहां विकसित की गई तकनीकों के व्यावसायिकरण के लिए करीब 520 सरकारी और गैरसरकारी कंपनियों व संस्थानों के साथ समझौते किए गए हैं।

यह मिल चुके हैं अवॉर्ड

राष्ट्रीयस्तर पर हकृवि को अनुसंधान, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1996 में बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड, 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थान अवार्ड तथा हाल ही में इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार, 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 व कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड 2018 से नवाजा जा चुका है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी छात्रों के बीच नवाचार की संस्कृति को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा देने के लिए इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सैल की स्थापना के लिए इस विश्वविद्यालय को प्रमाण पत्र प्रदान किया है। इनके अतिरिक्त भी इस विश्वविद्यालय ने अब तक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई अन्य पुरस्कार प्राप्त किये हैं। एग्री टूरिज्म पार्क कर रहा आकर्षित विश्वविद्यालय की हालिया पहल जैसा कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए इनोवेशन सैंटर की स्थापना, सैंटर फार बायो नैनो टैकनोलोजी, कॉलेज आफ एग्रीपेन्योर व बिजनेस मैनेजमेंट, दीनदयाल उपाध्याय सैंटर ऑफ एक्सीलेंस फार आर्गेनिक फार्मिंग, एग्री टूरिज्म पार्क, यूनिवर्सिटी इनोवेशन सैंटर, एग्री बिजनेस इनक्यूबेशन सैंटर, आधुनिक स्वदेशी बीज बैंक और आरकेवीवाई इनक्यूबेटर को भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा जा रहा है, जो नए स्टार्टअप और इनोपेन्योरस को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक और राष्ट्रीय निवेशकों को आकर्षित कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ एमओयू

हिसार। हकृवि ने शिक्षा तथा अनुसंधान में यूरसप, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड और आस्ट्रेलिया के साथ काम करने के लिए सादे चार करोड़ रूपए से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की हैं। जापान की इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जापान व टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर, अमेरिका की वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी व यूनिवर्सिटी ऑफ इलीनॉयस, जेम्स हटन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कॉटलैंड तथा वागेनिंगन यूनिवर्सिटी एंड रिसर्च, नीदरलैंड के साथ सहयोग के लिए अनुबंध किए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक भास्कर .....

दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. ....1..... कॉलम ..1-3.....

नेशनल लेवल की रिसर्च और शिक्षण कार्य पर मिली रैंकिंग

आईसीएआर रैंकिंग में कृषि विवि में एचएयू रही दूसरे पायदान पर

भास्कर न्यूज | हिसार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की 2018 की रैंकिंग गुरुवार को जारी कर दी गई। इसमें प्रदेश के दो संस्थानों ने टॉप 5 में जगह बनाई है। करनाल के एनडीआरई यानि नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने इसमें पहला स्थान प्राप्त किया है। वहीं रिसर्च इंस्टीट्यूट के अलावा कृषि विश्वविद्यालयों में हिसार के चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने इस बार पंजाब कृषि विवि को पछाड़कर देशभर में दूसरे स्थान पर जगह बनाई है। यह रैंकिंग आईसीएआर ने शिक्षण संस्थानों में राष्ट्रीय स्तरीय रिसर्च, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशेष कार्य करने पर जारी की है। गौरतलब है कि एचएयू पिछली बार इस रैंकिंग में पिछड़ गया था, मगर इस बार एचएयू ने पंजाब एग्रीकल्चर विवि और इसके समकक्ष कई कृषि शिक्षण संस्थानों को पछाड़ा है।

जानिए... एचएयू ने कैसे पाई विवि में दूसरी रैंकिंग

एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह बताते हैं कि विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा की अपनी अनिवार्य गतिविधियों में उच्च मानकों को दिन-प्रतिदिन बढ़ा रहा है। हाल ही में पाठ्यक्रमों में संशोधन और शिक्षक व गैरशिक्षक कर्मचारियों के कई रिक्त पदों को भरकर मानव संसाधन को मजबूत करने के अलावा विश्वविद्यालय में कई नई सुविधाएं स्थापित की हैं। एचएयू के छात्रों, फैकल्टी एक्सचेंज, ज्वॉइंट रिसर्च प्रोजेक्ट पर जोर दिया जा रहा है। इसके लिए यूरोप, अमेरिका और एशिया के दो दर्जन से अधिक प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध भी किया है।

यह है आईसीएआर की टॉप टेन रैंकिंग

1- नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल
2- इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली
3- जीबी पंत यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर, पंतनगर
4- एचएयू, हिसार
5- इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बरेली
6- प्रो. जयशंकर तेलंगाना स्टेट यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
7- पंजाब एग्रीकल्चर विवि, लुधियाना
8- गुरु अंगद देव वेटरनरी एंड एनिमल साइंस विवि, लुधियाना
9- जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि, जबलपुर
10- इंदिरा गांधी कृषि विवि रायपुर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पँजाब केसरी

दिनांक 19.2.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 1-4

हकृवि ने आई.सी.ए.आर. रैंकिंग में कृषि महाविद्यालयों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

हिसार, 18 जुलाई (ब्यूरो): राष्ट्रीय स्तर पर बैस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड प्राप्त कर चुके चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आई.सी.ए.आर. रैंकिंग वर्ष 2018 के लिए कृषि विश्वविद्यालयों में द्वितीय स्थान प्राप्त करके पुन: इतिहास रचा।

विवि को पहले मिल चुके हैं कई अवार्ड

यहां उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर इस विश्वविद्यालय को अनुसंधान, शिक्षा व विस्तार के क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1996 में बैस्ट इंस्टीट्यूशन अवार्ड, 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थान अवार्ड तथा हाल ही में इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार; 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 व कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड 2018 से नवाजा जा चुका है। इसके अलावा इस विश्वविद्यालय ने अब तक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई अन्य पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने कहा कि सभी की मेहनत व प्रतिभा से प्राप्त हुई है। ह.कृ.वि. किसानों के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा। फिलहाल वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुणा करने के लक्ष्य को लेकर और कृषि की वर्तमान समस्याओं के निवारण के लिए प्रयत्नशील हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....अमर उजाला........

दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. ....6.... कॉलम ....6....

आईसीएआर रैंकिंग में हकृवि दूसरे स्थान पर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार की तरफ से आईसीएआर रैंकिंग वर्ष 2018 के लिए कृषि विश्वविद्यालयों में द्वितीय स्थान हासिल किया है। इस रैंकिंग में देश के केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय व आईसीएआर के संस्थानों ने भाग लिया। बता दें कि इससे पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर इस विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की तरफ से वर्ष 1996 में बेस्ट इंस्टीट्यूशन अवॉर्ड, 2016 में सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थान अवार्ड और हाल ही में पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान पुरस्कार, 2017, हरियाणा किसान रत्न पुरस्कार 2018 व कृषि शिक्षा सम्मान 2018 से नवाजा जा चुका है। श्विविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी. सिंह ने कहा कि यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा की अपनी अनिवार्य गतिविधियों में उच्च मानकों को दिन-प्रतिदिन बढ़ा रहा है। इस विश्वविद्यालय के छात्रों, फैकल्टी एक्सचेंज, संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं और पारस्परिक हित के अन्य व्यवसायिक गतिविधियों के संदर्भ में यूरोप, अमेरिका और एशिया के दो दर्जन से अधिक प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध हैं। विश्वविद्यालय की हालिया पहल जैसा कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए इनोवेशन सेंटर की स्थापना, सेंटर फॉर बायो नैनो टेक्नोलॉजी को सराहा जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भूमि
दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. 11 कॉलम 2-6

हकृवि में वनस्पति विज्ञान पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला

कृषि समस्याओं के लिए विज्ञान के आधुनिक उपकरणों पर दिया जोर

- कार्यशाला में प्रतिभागियों को आधुनिक जैव विज्ञान तकनीकों का प्रशिक्षण दिया

हरिभूमि ब्यूज ▸▸ हिसार

हकृवि के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान द्वारा स्मार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित 'मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनोमिकल ट्रेट्स यूजिंग हाई थ्रूपुट तकनीक' शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक, डॉ. एमएस सिद्धपुरिया मुख्य अतिथि थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने अपने संबोधन में कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को विभिन्न फंडिग एजेंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। उन्होंने कृषि की उभरती समस्याओं को दूर करने के लिए जैव प्रोद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने पर जोर दिया।

हिसार। कार्यशाला को संबोधित करते मुख्य अतिथि डॉ. एमएस सिद्धपुरिया। फोटो : हरिभूमि

यह कार्यशाला युवा शोधकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों को उनकी प्रशिक्षण चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक तकनीक से समाधान का लाभ उठाने के विषय में जागरूक करने की सफल पहल साबित हुई। कार्यशाला में वंशाणुओं के आणविक मानचित्रण के सक्ष्म और निवारक बलों पर परिचर्चा और उनका क्रियान्वयन एक जीवंत सत्र था। जिसे अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा पाठ्यक्रम सह-निदेशक डॉ. उर्मिल बंसल द्वारा सांझा किया गया।

उन्होंने प्रतिभागियों को आधुनिक आणविक जीव विज्ञान तकनीकों और जैव सूचना विज्ञान सोफटवेयर संचालन का अभ्यासिक प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों को एक दूसरे के साथ नेटवर्किंग करने, चुनौतियों को सांझा करने तथा प्रौद्योगिकी सशक्त संसाधनों की खोज के लिए प्रेरणादायी समृद्ध अनुभव प्राप्त हुआ। विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. रेणु मुंजाल ने कार्यशाला आयोजन के मूल उद्देश्य तथा पाठ्य संरचना का विवरण दिया। कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला में वंशाणु पहचान, मानचित्रण, फिनोमिक्स, सांख्यिकीय टोल, अनुदान लेखन और जैव सूचना विज्ञान पर प्रशिक्षण एवं संबंधित विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। नव-युगीन अवधारणाएं जैसे कि उपन्यास वंशाणु पहचान और फसल सुधार के लिए इनका उपयोग उत्सुकता का केन्द्र रहा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर डीन, बेसिक सांइस, डॉ. राजवीर सिंह एवं एडीआर, डॉ. नीरज कुमार भी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद गोयल ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित कर कार्यशाला से जुड़े समस्त वैज्ञानिकों तथा प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 1.9.2.2019 पृष्ठ सं. ..... 4 ..... कॉलम ..... 2-4 .....

हकृवि में कार्यशाला आयोजित

हिसार, 18 जुलाई (ब्यूरो): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान द्वारा स्पार्क-एम.एच.आर.डी. द्वारा प्रायोजित 'मॉलेकुलर मैपिंग ऑफ इकोनोमिकल ट्रेटस यूजिंग हाई थ्रूपुट टैक्नोलॉजीस' शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन, निदेशक, डा. एम.एस. सिद्धपुरिया मुख्यातिथि थे।

मुख्य अतिथि डा. एम.एस. सिद्धपुरिया प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए।

डा. सिद्धपुरिया ने अपने संबोधन में कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को विभिन्न फंडिंग एजैंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में वंशाणु पहचान, मानचित्रण, फिनोमिक्स, सांख्यिकीय टोल, अनुदान लेखन और जैव सूचना विज्ञान पर प्रशिक्षण एवं संबंधित विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर डीन, बेसिक साइंस, डा. राजवीर सिंह एवं ए.डी.आर. डा. नीरज कुमार भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक भास्कर .....

दिनांक 19.7.2019 पृष्ठ सं. ....2..... कॉलम .....5-6.....

जैव प्रौद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करने पर बल दिया

एचएयू में अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञों ने रखे विचार

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान की ओर से स्पार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनॉमिकल ट्रेटस यूज़िग हाई थूरपुट टेक्नोलॉजिस शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। एचआरएम डायरेक्टर डॉ. एमएस सिद्धपुरिया मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने विभिन्न फंडिंग एजेंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। कृषि की उभरती समस्याएं दूर करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का उपयोग पर जोर दिया। इस अवसर पर डीन, बेसिक सांइस, डॉ. राजवीर सिंह एवं एडीआर, डॉ. नीरज कुमार उपस्थित रहे। डॉ. विनोद गोयल ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. रेणु मुंजाल ने कार्यशाला आयोजन के मूल उद्देश्य और पाठ्य संरचना का विवरण दिया।

एचएयू में एचआरएम निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देते हुए।

कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों और निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें वंशाणु पहचान, मानचित्रण, फिनोमिक्स, सांख्यिकीय टोल, अनुदान लेखन और जैव सूचना विज्ञान पर प्रशिक्षण एवं संबंधित विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। नव-युगीन अवधारणाएं जैसे कि उपन्यास वंशाणु पहचान और फसल सुधार के लिए इनका उपयोग उत्सुकता का केन्द्र रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....नभ छोर........
दिनांक 18.7.2019 पृष्ठ सं. ....2.... कॉलम ....2-4....

कृषि समस्याओं को दूर करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग करें : सिद्धपुरिया

हिसार/18 जुलाई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान द्वारा स्पार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित 'मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनॉमिकल ट्रेट्स् यूजिंग हाई थ्रूपुट टेक्नोलॉजी' शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक, डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को विभिन्न फंडिंग एजेंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। उन्होंने कृषि की उभरती समस्याओं को दूर करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने पर जोर दिया। यह कार्यशाला युवा शोधकर्त्ताओं तथा वैज्ञानिकों को उनकी प्रशिक्षण चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक तकनीक से समाधान का लाभ उठाने के विषय में जागरूक करने की सफल पहल साबित हुई। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। कार्यशाला में वंशाणुओं के आणविक मानचित्रण के सक्षम और निवारक बलों पर परिचर्चा और उनका क्रियान्वयन एक जीवंत सत्र था, जिसे अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा पाठ्यक्रम सह-निदेशक डॉ. उर्मिल बंसल द्वारा साझा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को आधुनिक आणविक जीव विज्ञान तकनीकों और जैव सूचना विज्ञान सॉफ्टवेयर संचालन का अभ्यासिक प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों को एक दूसरे के साथ नेटवर्किंग करने, चुनौतियों को सांझा करने तथा प्रौद्योगिकी सशक्त संसाधनों की खोज के लिए प्रेरणादायी समृद्ध अनुभव प्राप्त हुआ। विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. रेणु मुंजाल ने कार्यशाला आयोजन के मूल उद्देश्य तथा पाठ्य संरचना का विवरण दिया। कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में वंशाणु पहचान, मानचित्रण, फिनोमिक्स, सांख्यिकीय टोल, अनुदान लेखन और जैव सूचना विज्ञान पर प्रशिक्षण एवं संबंधित विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। नव-युगीन अवधारणाएं जैसे कि उपन्यास वंशाणु पहचान और फसल सुधार के लिए इनका उपयोग उत्सुकता का केन्द्र रहा। इस अवसर पर डीन, बेसिक सांइस, डॉ. राजवीर सिंह एवं एडीआर, डॉ. नीरज कुमार भी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद गोयल ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित कर कार्यशाला से जुड़े समस्त वैज्ञानिकों तथा प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सिटी पल्स .....

दिनांक 18.2.2019 पृष्ठ सं. .....3..... कॉलम .....2.....

हरियाणा कृषि विवि में स्पार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित 10 दिवसीय कार्यशाला संपन्न

मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित कर किया सम्मानित

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान द्वारा स्पार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित 'मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनोमिकल ट्रेटस् यूजिंग हाई थ्रुपुट टैक्नोलोजीस' शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक, डॉ. एमएस सिद्धपुरिया मुख्य अतिथि थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को विभिन्न फंडिग एजेंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। उन्होंने कृषि की उभरती समस्याओं को दूर करने के लिए जैव प्रोद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने पर जोर दिया। यह कार्यशाला युवा शोधकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों को उनकी प्रशिक्षण चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक तकनीक से समाधान का लाभ उठाने के विषय में जागरूक करने की सफल पहल साबित हुई। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

हिसार। मुख्य अतिथि डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा पाठ्यक्रम सह-निदेशक डॉ. उमिंल बंसल ने प्रतिभागियों को आधुनिक आण्विक जीव विज्ञान तकनीकों और जैव सूचना विज्ञान सॉफ्टवेयर संचालन का प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों को एक दूसरे के साथ नेटवर्किंग करने, चुनौतियों को साझा करने तथा प्रौद्योगिकी सशक्त संसाधनों की खोज के लिए प्रेरणादायी समृद्ध अनुभव प्राप्त हुआ।

विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. रेणु मुंजाल ने कार्यशाला आयोजन के मूल उद्देश्य तथा पाठ्य संरचना का विवरण दिया। कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर डीन, बेसिक साइंस, डॉ. राजबीर सिंह एवं एडीआर, डॉ. नीरज कुमार भी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद गोयल ने कार्यशाला से जुड़े समस्त वैज्ञानिकों तथा प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....नित्य शक्ति टाइम्स....
दिनांक 18.7.2019 पृष्ठ सं. ....8.... कॉलम ....1-5....

हकृवि में दस दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

'मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनोमिकल ट्रेट्स् यूज़िग हाई थ्रूपुट टैक्नोलोज़ीस' विषय पर हुई कार्यशाला

हिसार, 18 जुलाई (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं वनस्पति क्रिया विज्ञान द्वारा स्पार्क-एमएचआरडी द्वारा प्रायोजित 'मॉलेकुलर मेपिंग ऑफ इकोनोमिकल ट्रेट्स् यूज़िग हाई थ्रूपुट टैक्नोलोजीस' शीर्षक पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। कार्यशाला के समापन अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक, डॉ. एमएस सिद्धपुरिया मुख्य अतिथि थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने अपने संबोधन में कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को विभिन्न फंडिंग एजेंसियों, नेटवर्किंग और उच्च प्रभाव वाले शोध प्रपत्रों एवं शोध प्रस्ताव में परिवर्तित करने पर बल दिया। उन्होंने कृषि की उभरती समस्याओं को दूर करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी और विज्ञान के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने पर जोर दिया। यह कार्यशाला युवा शोधकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों को उनकी प्रशिक्षण चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक तकनीक से समाधान का लाभ उठाने के विषय में जागरूक करने की सफल पहल साबित हुई। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। कार्यशाला में वंशाणुओं के आणविक मानचित्रण के सक्षम और निवारक बलों पर परिचर्चा और उनका क्रियान्वयन एक जीवंत सत्र था, जिसे अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा पाठ्यक्रम सह-निदेशक डॉ. उर्मिल बंसल द्वारा सांझा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को आधुनिक आणविक जीव विज्ञान तकनीकों और जैव सूचना विज्ञान सोफटवेयर संचालन का अभ्यासिक प्रशिक्षण दिया। प्रतिभागियों को एक-दूसरे के साथ नेटवर्किंग करने, चुनौतियों को सांझा करने तथा प्रौद्योगिकी सशक्त संसाधनों की खोज के लिए प्रेरणादायी समृद्ध अनुभव प्राप्त हुआ।

विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. रेणु मुंजाल ने कार्यशाला आयोजन के मूल उद्देश्य तथा पाठ्य संरचना का विवरण दिया। कार्यशाला में देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में कार्यरत 28 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में वंशाणु पहचान, मानचित्रण, फिनोमिक्स, सांख्यिकीय टोल, अनुदान लेखन और जैव सूचना विज्ञान पर प्रशिक्षण एवं संबंधित विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। नव-युगीन अवधारणाएं जैसे कि उपन्यास वंशाणु पहचान और फसल सुधार के लिए इनका उपयोग उत्सुकता का केन्द्र रहा। इस अवसर पर डीन, बेसिक साइंस, डॉ. राजवीर सिंह एवं एडीआर, डॉ. नीरज कुमार भी उपस्थित रहे। डॉ. विनोद गोयल ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित कर कार्यशाला से जुड़े समस्त वैज्ञानिकों तथा प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।